Indian Streams Research Journal ORIGNAL ARTICLE ISSN:-2230-7850

प्रवासी भारतीयों का हिन्दी साहित्य लेखन के प्रति स्नेह

सोनिया राठी

एम.ए.(स्वर्णपदक विजेता) एम.फिल.

सारांश **:-**यह जान कर आश्चर्य होगा कि अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा जैसे देशों में जहाँ अंग्रेजी भाषा का बहुलता से प्रयोग किया जाता है। वहाँ अनेक प्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी भाषा में साहित्य का सृजन किया जा रहा है। ये साहित्यकार हिन्दी से प्रत्यक्ष रूप से न जुड़े होने पर भी हिन्दी भाषा में साहित्य लेखन कर रहे हैं। जो भारतीय भारत से दूर भिन्न भिन्न देशों में गये पश्चिम देशों की भाषा के साथ साथ उन्हें अपनी भारतीयता को जीवित रखने के लिये हिन्दी की आवश्यकता अनुभव हुई। अपने अनुभवों को बांटने के लिये उन्होंने हिन्दी भाषा को लेखन का माध्यम बनाया। अपने आस–पास की घटनाओं को प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी साहित्य में उतारा है।

प्रस्तावना :

प्रवासी भारतीयों द्वारा लिखने के कारण इस साहित्य को प्रवासी हिन्दी साहित्य कहा गया है। इस साहित्य में प्रवासी भारतीयों की लिखी कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास, लेख, निबन्ध आदि शामिल हैं। जिन्हें पढ़कर प्रवासी भारतीयों की संवेदनशीलता का ज्ञान होता है। समाज में जो विद्रूपता और विषमताएं है वह केवल भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भी व्याप्त हैं। प्रवासी साहित्यकारों ने अपने अनुभव से प्रतिदिन जीवन में घटित घटनाओं में से अनेक विषयों को लिया है। प्रवासी साहित्यकार भारतीय अपने भावों को हिन्दी के द्वारा व्यक्त कर हिन्दी के प्रति अपना लगाव दिखाते हैं। भारत में साहित्य के अन्तर्गत शुद्ध साहित्यिक हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रवासी हिन्दी साहित्यकार के साहित्य में उस देष की भाषा के शब्द समाहित हो जाते हैं जिस देष में वह निवास करता है। इस कारण यह प्रवासी हिन्दी साहित्य थोड़ा भिन्न दिखाई पड़ता है। यह भिन्नता उन साहित्यकारों का हिन्दी के प्रति लगाव कम नहीं कर पाती। प्रवासी हिन्दी साहित्यकार हिन्दी के विकास के लिये अनेक संस्थाओं के साथ निस्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं। भारत में सम्पन्न होने वाली अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठियों एवं हिन्दी कथा साहित्य सम्मेलनों के द्वारा प्रवासी हिन्दी साहित्य को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इन संगोष्ठियों में भिन्न–भिन्न देशों से आए प्रवासी हिन्दी साहित्यकार भाग लेते हैं। जो लोग विदेश गमन की इच्छा रखते है उनकी प्रवासी साहित्य में जिज्ञासा अधिक मात्रा में होती है। आज विदेशी पृष्ठभूमि पर 'भारतीय हिंदी साहित्य' के अनेकों साहित्यकार अपने गूढ़ अध्ययन, मनन एवं चिन्तन द्वारा साहित्य निधि को सुदृढ़ और सशक्त कर रहें हैं। भारतीय होने के कारण जहाँ वे हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार विदेशों में कर रहे हैं, वहीं वे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से भी विदेशियों को अवगत करवा रहे हैं। विश्व भर के हिंदी साहित्यकार अपनी मानसिक अनुभूति, जीवन–दृष्टि, यथार्थ के प्रति बौद्धिक तथा भावनात्मक–चेतना को लेकर न केवल कविताएं, गज़ल, कहानी, लघुकथाएं, उपन्यास, संस्मरण व आलेख आदि लिखकर हिंदी साहित्य को एक नई पहचान दे रहे हैं, अपितु इसके साथ–साथ अध्यापन, पत्र–पत्रिकाओं के संचालन, विश्व–हिंदी सम्मेलनों व गोष्ठियों आदि का आयोजन करके विदेशियों को अपनी भाषायी अस्मिता से भी परिचित करवा रहे हैं। प्रवासी साहित्यकारों में उन साहित्यकारों का योगदान का अद्वितीय है जिनके पूर्वज गुलाम 'भारत' से मजदूरी के लिए भिन्न–भिन्न देशों में ले जाये गए थे, फिर भी उन्होंने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता और भाषा को बचाए रखा, जिसके फलस्वरूप 'मॉरीशस', 'फिजी', 'सूरीनाम', 'त्रिनिदाद' और 'गुयाना' में भारतीय कलम से साहित्य को समृद्ध किया जा रहा है। विदेशों में रहने वाले हिन्दी के साहित्यकार अपने देश के प्रति अधिक सजग एवं समर्पित हैं।

'अभिमन्यु अनत' के उपन्यास 'लाल पसीना' में 'मॉरीशस' में गये भारतीय मजदूरों के साथ अंग्रेजों द्वारा किए गये क्रूर और अमानवीय व्यवहार का चित्रण किया गया है। मजदूरों का जीवन अनेक परेशानियों से गुजरता हुआ, आज 'मॉरीशस' में अपना एक मुकाम बना चुका है। भारतीय मजदूरों के जीवन के इतिहास को यह उपन्यास दर्शाता है। इस उपन्यास में पूरी कथा भारतीय मजदूरों के ईर्द–गिर्द घूमती है। भारतीय मजदूर 'मारीशस' में गुलाम बनाए गये। उनका 'मॉरीशस' की भूमि पर कोई स्वामित्व नहीं था। मजदूर अपनी मेहनत से जो भी फसल उगाते, फसल पकने पर अंग्रेज उस अनाज को अपने गोदाम में भर लेते। गोदाम में भरे अनाज को अंग्रेज मजदूरों को उनकी मजदूरी के बदले में देते थे। उनको जो अनाज मिलता वह गला–सड़ा व मात्रा में एक आदमी के हिसाब से काफी कम होता था। इस कारण भारतीय मजदूर जी–तोड़ मेहनत के बावजूद भी भर–पेट भोजन नहीं कर पाते थे। मजदूरों को स्वयं घास–फूस की झोंपड़ियों में रहना पड़ता था। ये झोपड़ियां तूफान व बारिश आने पर सुरक्षित नहीं थी। तूफान आने पर वे पूरी तरह तहस–नहस हो जाती व बारिश आने पर लोगों को बारिश में भीगना पड़ता। जिसके कारण भारतीय मजदूर बीमार पड़ जाते और उनकी मृत्यु भी हो जाती थी। 'अभिमन्यु अनत' ने इस उपन्यास के माध्यम से 'मारीशस' से बाहर 'भारत' व अन्य देशों तक उनकी पीड़ा को पहुँचाने का कार्य किया है। अभिमन्यु अनंत की कहानी 'जहर और दवा' एक पुत्र द्वारा पिता को जीवन की सही दिशा की तरफ ले जाने की कहानी है। अपनी माँ के हक को बनाए रखने के लिये अपने पिता की आंखों पर पड़े पराई स्त्री के मोह का पर्दा हटा कर सच्चाई को सामने लाना है। 'सोफिया' नामक स्त्री जो कि उसकी माता के जीवन में जहर बनकर आती है उसी के द्वारा वह अपने पिता की आंखें खोलता है। 'सोफिया' जैसी स्त्री पैसों की चाह में कुछ भी कर सकती है, इसे वह अपने पिता के समक्ष प्रमाणित करता है। एक व्यक्ति किस प्रकार एक पराई स्त्री के मोह जाल में फंसकर अपने परिवार को नजर अंदाज करता है, यह इस कहानी के द्वारा दर्शाया गया है।

'तजेन्द्र शर्मा' ने पूँजीवादी विचारधारा व मार्क्सवादी विचारधारा को अपने साहित्य का आधार दिया है। सम्बन्धों में आर्थिक पक्ष की प्रबलता पर उन्होंने अधिक कहानियाँ लिखी हैं। 'काला सागर' कहानी में पैसे की हवस, विदेशी सामान के प्रति लालच, लाशों के प्रति अमानवता को दर्शाया है। बदलते समाज के साथ मानव–मूल्य भी किस प्रकार घटता जा रहा है। संवेदना केवल दिखावे की वस्तु बनकर रह गई है। परिवार के सदस्य अपने प्रियजन की मृत्यु के उपरान्त जीवन को चलायमान रखने के लिए किस प्रकार बदलाव लाते हैं। जो लोग विमान दुर्घटना में मारे जाते हैं, उनके प्रियजन प्रारम्भ में दुखी होते हैं, फिर अपने–अपने लिये खरीदारी करने व सामान भरने में लग जाते हैं। आज के पूंजीवादी समाज में जिसका स्वार्थ जिसके साथ जुड़ा है बस वह ही दुखी होता है। इस यथार्थ का चित्रण 'काला सागर' कहानी में किया गया है। 'देह की कीमत' कहानी विदेश में बसने की इच्छा रखने वालों के बहुत से भ्रम तोड़ती हैं। जो लोग सही तरीके से विदेश नहीं जा पाते, वे तरह–तरह के गैरकानूनी तरीकों के द्वारा विदेश जाने से भी पीछे नहीं हटते। गैरकानूनी तरीकों के प्रयोग में लाने के कारण उन लोगों को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अवैध रूप

से विदेश में प्रवेश के कारण उनकी मुश्किलें बढ़ जाती हैं। विदेश के प्रति आकर्षण के चलते प्रत्येक भारतीय सही या गलत किसी भी ढंग से वहाँ पहुँचने की कामना रखता है। अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिये वे वहाँ जा कर कोई भी काम करने को तैयार हो जाते हैं। पंजाब की युवा पीढ़ी में यह रुचि तो पागलपन की हद तक है। कितने ही लोग अपनी जमीन–जायदाद बेच कर, बड़े–बड़े स्वप्न संजोकर, वैध और अवैध ढंग से विदेशों की ओर भागते हैं और वहां दर–ब–दर की ठोकरें खाते हैं। विदेशी समाज में लोग उन भारतीय प्रवासी लोगों को नौकरी देने से भी कतराते हैं जो गैरकानूनी ढंग से वहाँ आए हुए होते हैं क्योंकि ऐसी स्थिति में नौकरी लेने वाले के साथ–साथ देने वालों के भी कानूनन गिरफ्तार होने का खतरा होता है। 'ढ़िबरी टाइट' में विदेशी भाषा की अज्ञानता के कारण प्रवासी भारतीयों को जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, इसका वर्णन इस कहानी में मिलता है। विदेश के प्रति आकर्षण होने के कारण 'गुरमीत' 'कुवैत' जाता है। कुछ समय बाद वह अपनी पत्नी और बेटी को भी अपने साथ 'कुवैत' ले जाता है। उसकी पत्नी वहाँ पुनः गर्भ धारण करती है। भाषा की अज्ञानता के कारण वह पुलिस इंस्पेक्टर को अपनी बात नहीं समझा पाता। जब चार दिन बाद जब वह जेल से घर वापिस आता है तब अपनी पत्नी, नवजात शिशु और बेटी तीनों को मरा हुआ पाता है।

'सुषम बेदी' ने अपने साहित्य में अनेक गहन–गम्भीर मसलों को उठाया है। उन्होंने नस्ली भेदभाव के शिकार प्रवासी भारतीयों की मानसिकता को भली प्रकार समझा व अपने साहित्य में प्रकट किया। उन्होंने अपने साहित्य में अन्तर्नस्ली विवाहों की विडंबना के पीछे कार्यशील नस्लवादी सोच और सांस्कृतिक तनाव को जीवंत रूप में उजागर किया। 'अंजेलिया का फूल' कहानी प्रवासी भारतीयों के मानसिक द्वन्द्व को प्रकट करती है। पश्चिमी समाज में अंतर्नस्ली विवाहों की गिनती बढ़ती जा रही है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इससे बेगानापन खत्म हो रहा है। प्रवासी भारतीयों के प्रति यह भाव उसी तरह बरकरार ही नहीं, बल्कि बढ़ रहा है क्योंकि अंतर्नस्ली विवाह में प्रवासी भारतीय बहू या दामाद को पश्चिमी समाज के लोग स्वीकार नहीं कर पाते। इसी कारण वह परिवार में रहते हुए भी अपने आपको बेगाना सा महसूस करते हैं। 'मिसेज मिलर' ने 'निक' के साथ अंतर्नस्ली विवाह किया है। इस अंतर्नस्ली विवाह के कारण वह नस्ली भेदभाव का शिकार होती है। यह नस्ली भेदभाव उसमें केवल बेगानापन उत्पन्न करता है। उसे 'निक' का प्यार मिला किन्तु वह चाहकर भी उसके परिवार के करीब नहीं आ सकी। जीवन की इस विकट परिस्थिति ने उसे भटकाव, निराशा और उदासी ही दी। 'निक' से मानसिक और शारीरिक रूप से संतुष्ट होने के कारण वह उससे बेहद प्रेम करती है। 'निक' में नस्लवाद का भाव न होने के कारण वह उसका बेहद सम्मान करती है। 'मिसेज मिलर' विदेश में रहने वाली एक प्रवासी भारतीय नारी है। विदेशी समाज से वह बहुत प्रभावित है। वहां का रूखापन उसे अच्छा लगता है। भारतीय भावनाओं से वह कोसों दूर रहना चाहती है। 'मिसेज मिलर' भारतीय मानसिकता से भली–भांति परिचित है। उसे लगता है कि हिन्दुस्तानी रिश्तेदारों को प्रवासियों की मेहनत दिखाई नहीं देती, सिर्फ पैसा ही दिखाई देता है। 'मिसेज मिलर' पश्चिमी समाज से बेहद लगाव रखने वाली प्रवासी भारतीय नारी है। वह 'निक' के साथ–साथ उसके परिवार को भी पाना चाहती है किन्तु ऐसा न होने पर वह तनावग्रस्त हो जाती है। 'तीसरी दुनिया का मसीहा' कहानी प्रवासी भारतीयों के अन्ध विश्वास को दर्शाती है। भारत के किसी भी भाग का व्यक्ति जब विदेश में जाकर बसता है, तब वह अपने साथ अपने संस्कार, आस्थाएं, धार्मिक विश्वास और सामाजिक–पारिवारिक परंपराएँ और रूढ़ियां भी ले जाता है। वहां उसका अन्य संस्कृतियों के साथ टकराव होता है और ऐसे संघर्ष से अनेक समस्याएं और आन्तरिक उलझनें जन्म लेती हैं। 'जो ब्रूनो' पढ़ा–लिखा होने के बावजूद भी धार्मिक अंधविश्वासों में जकड़ा जाता है। अपने जीवन की मुश्किलों का हल वह स्वामी जी के पाखंडों द्वारा ढूंढ़ना चाहता है। 'तनु' के साथ अपने मधुर संबंधों को वह स्वामी जी के कहने पर तोड़ने के लिए तैयार हो जाता है। 'कतरा दर कतरा' में माता पिता द्वारा अपने बेटे से आवश्यकता से अधिक अपेक्षाएं रखने के कारण मनोविकारों का उत्पन्न होना दिखाया गया है। 'कतरा दर कतरा' उपन्यास में लेखिका एक सिक्के के दो पहलुओं को दर्शाने का प्रयास करती है। एक तरफ 'कुक्कू' अपने माता पिता की महत्त्वाकांक्षाओं का शिकार होता है। उन को पूरा न कर पाने के कारण अपराध बोध से ग्रस्त हो जाता है। उस समय 'कुक्कू' को अपने माता–पिता के प्यार व हौसले की बहुत आवश्यकता होती है। लेकिन वह 'कुक्कू' को समझने का प्रयास भी नहीं करते। अब वह जिंदगी में कुछ नहीं बन सकेगा, यह नकारात्मक सोच 'कुक्कू' के दिमाग में घर कर जाती है। वह संघर्ष करने की बजाय धीरे–धीरे शून्य की स्थिति में पहुँच जाता है। यह स्थिति उसकी मौत का कारण बन जाती है। उसके माता–पिता भी उसकी इस दशा के जिम्मेदार हैं। दूसरी तरफ 'अंशु' खिड़की से गिर जाता है। यह स्थिति 'शशि' के कारण पैदा नहीं होती फिर भी 'शशि' का प्रेम व मोह उसके बच्चे की सहायता करता है। 'शशि' के द्वारा दिये गये हौसले के कारण ही 'अंशु' धीरे–धीरे सामान्य हो जाता है।

'उषा राजे सक्सेना' की कहानियों में स्त्री–विमर्श पर अधिक बल दिया गया है। बढ़ती हुई वेश्यावृत्ति की ओर भी वह पाठकों का ध्यान आकर्षित करती हैं। उनकी कहानी 'वह रात' विदेश में नारी की असुरक्षा को दर्शाती हुई कहानी है। पति की मृत्यु होने पर औरत अपने बच्चों के पालन–पोषण के लिये हर प्रकार के कार्य करने पर विवश हो जाती है। एक माँ अपने बच्चों को प्यार, ममता व जिम्मेदारी के साथ पालती है। उसे रात को भी बिना किसी डर के जिस्मफरोशी के काम पर निकलना पड़ता है। वह अपने इस जिस्मफरोशी के काम को अपने बच्चों से भी छुपा कर करना चाहती है और अपने दायित्व को भी निभाती है। लेखिका पहले यह बताती है कि पति की मृत्यु के उपरान्त स्त्री को कैसे–कैसे काम करने पर विवश होना पड़ता है और माता–पिता दोनों की मृत्यु के उपरान्त बच्चों की क्या दशा होती है। बच्चे किस प्रकार नियति का शिकार हो कर एक दूसरे से भी अलग हो जाते हैं।

'निशान' 'दिव्या माथुर' की प्रवासी भारतीय स्त्री के जीवन में विवाह के उपरान्त आये संकट की कहानी है। इस

कहानी में भारतीय स्त्री शादी करके विदेश आती है किन्तु उसका पति उसके प्रति कोई लगाव नहीं रखता। भारतीय नारी की तरह वह पति द्वारा दी जाने वाली हर प्रताड़ना को सहन करती है। वह अपने चेहरे पर उसके पति के द्वारा मार–पीट से बने निशानों को अपने मैकअप में छुपाने का असफल प्रयास करती है। आज भी स्त्री चाहे विदेश में वास कर रही हो या 'भारत' में, वह शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार है। उसकी भारतीय मानसिकता उसे विरोध करने की इजाजत नहीं देती। इसलिए वह चुपचाप इस शोषण का शिकार होती रहती है। यही कारण है कि प्रवासी भारतीय समाज में भी स्त्री की दशा दयनीय है। 'फिर कभी सही' कहानी स्त्री–पुरुष के अवैध सम्बन्धों के कारण मानसिकता पर जो प्रभाव पड़ता है को दर्शाती है। प्रवासी भारतीय समाज में बढ़ते अवैध सम्बन्ध भारतीय परम्पराओं को तोड़ते हुए प्रतीत हो रहे हैं। अवैध सम्बन्धों से क्या मनुष्य के जीवन में सन्तुष्टि का भाव व खुशहाली आ सकती है? इन अवैध सम्बन्धों से उत्पन्न समस्याओं को इस कहानी में दर्शाया गया है।

इस प्रकार प्रवासी हिन्दी साहित्य एक भिन्न संवेदना एवं सरोकार का आस्वादन कराता है। भारत के हिन्दी पाठक व शोध–कर्ताओं के लिए यह एक नई दिशा है। इसमें कथानक और पात्र नए हैं। जिसके द्वारा हम स्वदेश–विदेश के बीच अपने ही लोगों की समस्याओं को देखते हैं। भारतीय हिन्दी साहित्य की तुलना में प्रवासी हिन्दी साहित्य बहुत छोटा है। प्रवासी जीवन को प्रवासी हिन्दी साहित्य के माध्यम से साहित्यकारों ने अलग–अलग ढंग से प्रकट किया है। उनकी अभिव्यक्ति की शैली भी एक दूसरे से नितान्त भिन्नता लिए हुए है। कथा साहित्य में हमें प्रवासी भारतीयों के जीवन व उनकी समस्याओं से परिचित कराने का सफल प्रयास है। हिन्दी साहित्य के विशाल सागर में प्रवासी हिन्दी साहित्य एक छोटी सी किन्तु सशक्त धारा है, मेरे इस लेख द्वारा यदि प्रस्तुत साहित्य को गहराई से समझने और उसे नई दृष्टि से मूल्यांकित करने की प्रेरणा मिलती है, मैं अपने श्रम को सार्थक समझूंगी। शोधार्थी भी आज कल प्रवासी हिन्दी साहित्य को अपने शोध का विषय बना कर शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे है। प्रवासी हिन्दी साहित्य के प्रति शोधार्थी अधिक रुचि रखते है क्योंकि यह साहित्य शोधार्थियों की विदेश के वातावरण व परिवेश के प्रति जिज्ञासा को शान्त करने में सहायता करता है। मेरे लेख का लक्ष्य प्रवासी हिन्दी साहित्य की एक विवेचनात्मक झांकी देना है। प्रवासी हिन्दी साहित्य एक भिन्न संवेदना एवं सरोकारों के साथ आस्वादन कराता है। यह विषय नई पीढ़ी द्वारा हिन्दी के प्रवासी हिन्दी साहित्य के विकास, प्रोत्साहन, अध्ययन व मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होगा।